इंसुलिन पर हाय तौबा...

> श्रीमती सुमन ओबेरॉय

जब से मैंने इंसुलिन लेना शुरू किया है, मैं बेहद खुश हूँ, क्योंकि यकायक रिश्तेदारों, मित्रों और पास-पड़ौस में मेरी पूछ-परख बढ़ गई है। मैं सामान्य श्रेणी के रोगी से अति विशिष्ट (VIP) श्रेणी के रोगी की लिस्ट में शुमार हो गई हूँ। लोगों ने मुझे सीरियसली लेना शुरू कर दिया है। उनका मानना है कि मेरी बीमारी लास्ट स्टेज पर पहुँच गई है, फलत: प्रश्नों की ऐसी बौछार मुझ पर पड़ रही है कि समझ में नहीं आता कि अपनी हालत पर तरस खाऊँ या उनकी बुद्धि पर?

कल ही मेरी सास का फोन आया। बन्दूक की गोली सा प्रश्न दागा, 'क्यों तेरी हालत इतनी गई बीती हो गई है क्या, जो तेरे डॉक्टर ने इंसुलिन दे मारी। बारह साल से गोलियाँ फाँक रही हो वो

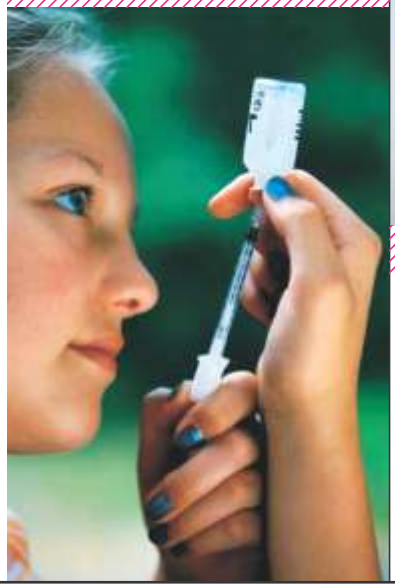

काफी नहीं था क्या, जो सूआ ठोकने की नौबत आ गई? ज़िन्दगी भर के लिये लफड़ा पाल लिया है तूने। कहाँ ठोंकती है सुआ?' मैंने धीरे से कहा 'पेट में'। चिल्लाकर बोलीं - 'पेट में' दिमाग़ खराब हो गया है क्या? घाव हो जायेगा। देख, तू साफ मना कर दे डॉक्टर को, कि मैं यह मुसीबत नहीं पाल सकती, अभी मुझे घर-गृहस्थी के बहुत से काम करने हैं। डॉक्टर न माने तो मेरी सलाह मान डॉक्टर ही बदल दे।

मेरा तो सिर ही घूम गया है। इन बेसिर-पैर की बातों का है कोई जवाब?

उधर, मेरी जेठानी इंसुलिन का नाम सुनते ही भड़क गईं 'तुम को मैंने बाबा की पुड़िया भेजी थी न'? नहीं ली न तुमने वरना यह नौबत न आती। तुम पढ़े-लिखे लोगों की यही प्रॉब्लम है, बात नहीं मानते। तुम्हारे लिये तो डॉक्टर ही भगवान है। जिस 'बाबा' के सामने सारी दुनिया सीस नवाती है, तुम उसे कुछ नहीं समझतीं 'पुड़िया खाई होती तो यह नौबत न आती। भाई, हम तो केवल सलाह ही दे सकते हैं - आगे तुम्हारी मर्ज़ी।'

अपनी एक सहेली को मैंने बहुत एक्साईटेड होकर फोन किया कि,

'इंसुलिन लगाने के बाद मैं बहुत अच्छा महसूस कर रही हूँ। आँख बन्द करती हूँ तो फूल और तितलियाँ नज़र आते हैं। इस उम्र में भी छोकरियों की तरह उड़ने और खिलखिलाने का मन होता है आदि, आदि।' मगर इंसुलिन का नाम सुनते ही उधर से ऐसा बम्बारमेंट हुआ कि मैं धोबी पछाड़ की पटकी खा गई। मैं निचुड़े कपड़े की तरह हो गई। वह पट से बोलीं, ''क्यों? आखिरी स्टेज आ गई है क्या? और कोई चारा नहीं था क्या? कौन लगाता है इंजेक्शन? अपने आप? डर नहीं लगता क्या? यह तो आखरी इलाज है न? हे भगवान। मैं तेरे लिये दुआ करूँगी...।'' फोन करने से पहले जो मैं तितली की तरह उड़ रही थी- अब मैं यमदूत के हिंडोले में उड़ रही थी। आँखें बंद करती तो यमदूत का भैंसा नज़र आता। मैं बेहद कन्फ्यूज़ होती जा रही हूँ। मुझे इंसुलिन से कोई परेशानी नहीं है। मैं शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ महसूस कर रही हूँ। मुझे अपने डॉक्टर पर पूरा भरोसा है? पेट टटोला तो कहीं कोई घाव न था, पेन की सुई को बड़े ध्यान से देखा- वह कहीं से भी 'सूआ' नज़र नहीं आ रही थी, 'सिलिकोन कोटेड' बहुत ही फाईन नीडल- चमड़ी के अन्दर कब इंसुलिन की छिड़काव कर देती है पता ही नहीं चलता। मैं तो डर नहीं रही पर मेरे हितैषियों की आँखों में मेरे 'अंत' का डर मुझे साफ नज़र आ रहा है। मुझे लग रहा है मैं अब स्वस्थ लोगों की दुनियाँ में आ रही हूँ। मगर उनके चेहरे का भाव बता रहा है कि निश्चित रूप से मेरे 'जाने' का समय तय हो गया है। मैं ठीक महसूस कर रही हूँ और वह 'परेशान'। मैं बेहद कन्फ्यूज़ हुई जा रही हूँ कि बीमार मैं हूँ या वह...! आपको क्या लगता है? आपके पास उत्तर हो तो मुझे बतायें। ●●●

यदि आप डॉक्टर का पूर्ण सहयोग चाहते हैं तो निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें...

1. डॉक्टर के पास आने से पहले पुराने चिकित्सा-पत्र एवं जाँचें इकट्ठी कर लें और लायें।
2. डॉक्टर को पहले बोलने दें। वह जो पूछे वे बातें सही-सही बतायें।
3. पारिवारिक बीमारी का इतिहास बताते वक़्त शरमायें नहीं।
4. आपकी वर्तमान एवं पहले से चालू बीमारियों को शांतता से अवश्य एवं शुरुआत में ही बता दें, हो सकता है आपकी वर्तमान तकलीफें चालू बीमारी का भाग हों।
5. वर्तमान में जो दवाईयाँ चल रही हैं, उन्हें नोट कर ले आयें या दवाईयाँ दिखाने के लिये ले आयें।
6. दवाई का पर्चा सँभालकर रखें एवं फाईल बनायें।
7. रोगी अपने साथ एक सदस्य को अवश्य लायें।
8. रोगी धैर्य एवं शांतता रखें और डरें नहीं।
9. ढेर सारे प्रश्न एक साथ न करें। प्रश्न हमेशा दवाई का पर्चा बनने के बाद ही करें।
10. डॉक्टर के पास अपने से पूर्व डॉक्टर को सूचित करें।

-प्रो. (डॉ.) एस.एस. येसीकर, भोपाल.